अध्याय–9

सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र इलाहाबाद

सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के अधीन एक उन्नत केन्द्र के रूप में अक्टूबर,1992 में स्थापित किया गया था। वर्तमान में, यह वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून की एक शाखा है। इस केन्द्र का उद्देश्य पूर्वी उत्तर प्रदेश, उत्तरी बिहार और उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र में सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन के क्षेत्र में व्यावसायिक विशिष्टता का पोषण एवं संवर्धन करना है।

वर्ष 2003–2004 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

कोई नहीं

वर्ष 2003–2004 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1 : इलाहाबाद जिले के विन्ध्य रेंज में सूक्ष्मजीवी प्रौद्योगिकी द्वारा सिलिका खनन भूभागों का पुनरवनस्पतिकरण [एफ.आर.आई.–141/सी.एस.एफ.ई.आर.–01]

प्रधान अन्वेषक– श्रीमती कुमुद देव

स्थिति : अंकुरण और वृद्धि व्यवहार पर विभिन्न जैव–उर्वरक संयोजनों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए चयनित प्रजातियों– यथा, ऐकेशिया निलोटिका, ऐकेशिया कटैचू, ब्यूटीया मोनोस्पर्मा और पोंगेमिया पिन्नाटा के पौधशाला परीक्षण किए गए। प्रयुक्त जैव उर्वरक थे– एजोटोबैक्टर, राइजोबियम, फॉरेस्ट विलेयक जीवाणु, नीली–हरी एल्गी और वी.ए.एम.। अन्य उपचारों की तुलना में वी.ए.एम. उत्कृष्ट पाया गया। नियंत्रण की अपेक्षा विभिन्न जैव उर्वरक संयोजनों के साथ उपचारित बीजों में अंकुरण समय भी घटाया गया। उत्तरजीविता तथा आगे वृद्धि प्रदर्शन का अध्ययन करने के लिए शंकरगढ़, इलाहाबाद में तीन प्रतिकृति में यादृच्छिकीकृत ब्लॉक अभिकल्प का उपयोग करके सिलिका खनन भूभाग में संरोपित पौधों का एक क्षेत्र परीक्षण तैयार किया गया। अन्य दो प्रजातियों की अपेक्षा क्षेत्र परीक्षण में पोंगेमिया पिन्नाटा और ब्यूटीया मोनोस्पर्मा बेहतर कर रहे हैं।

परियोजना 2 : पूर्वी उत्तर प्रदेश में बुकानेनिया लेंजन के कृत्रिम पुनर्जनन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी का विकास [एफ.आर.आई.–141/सी.एस.एफ.ई.आर.–02]

प्रधान अन्वेषक– श्री गंगा प्रसाद

स्थिति : बुकानेनिया लेंजन बीजों के पूर्व अनुसंधान को सशक्त बनाने और अंकुरण व्यवहार का अध्ययन करने के लिए पौधशाला में एक प्रयोग स्थापित किया गया। विभिन्न वन प्रभागों से पहचान किए गए कैन्डिडेट धन वृक्षों के बीज एकत्र किए और पडिला में सी एस एफ ई आर की अनुसंधान पौधशाला में बोया गया। बुआई–पूर्व विभिन्न उपचारों, यथा–24 घण्टे के लिए शीत जल, 48 घण्टे के लिए शीत जल, 12 घण्टे गरम जल, 10 मिनट के लिए सान्द्रित सल्फ्यूरिक एसिड, बी जी ए, वी ए एम और छाया/धूप का उपयोग यादृच्छिकीकृत ब्लॉक अभिकल्प में पॉलीबैगों साथ ही साथ पौधशाला क्यारियों में किया गया।

सभी उपचारों में से 24 घण्टे के लिए शीत जल के साथ उपचारित बीज और नीली–हरी एल्गी ने अन्य की अपेक्षा बेहतर प्रदर्शन किया। यह भी प्रेक्षित किया गया कि प्राकृतिक छाया में पौधों ने धूप में पौधों की अपेक्षा बेहतर प्रर्दशन किया। यह प्रेक्षित किया गया कि नियंत्रण की अपेक्षा सभी उपचारों में अंकुरण समय घटा और अंकुरण प्रतिशतता बढ़ी।

वर्ष 2003–2004 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1 : पूर्वी उत्तर प्रदेश में लोगों के अनुकुल वानिकी कार्यक्रमों में सामाजिक–आर्थिक दबावों का अध्ययन करना [एफ.आर.आई.–253/सी.एस.एफ.ई.आर.–04]

प्रधान अन्वेषक– श्री वी.के. सिंह

स्थिति : अध्ययन के लिए प्रतिनिधित्व जिलों यथा–इलाहाबाद, वाराणसी, बलिया, गोरखपुर और गोंडा का चयन किया गया। विभिन्न संस्थानों में क्षेत्र में विशेषज्ञों के साथ सर्वेक्षण के लिए कार्यपद्धति पर चर्चा की गई और अध्ययन के लिए प्रश्नावली तैयार की गई।

परियोजना 2 : स्थानीय लोगों में जागरूकता सृजन के लिए औषधीय पादप पौधशाला का विकास करना [एफ.आर.आई.–254 / सी.एस.एफ.ई.आर.–05]

प्रधान अन्वेषक–श्री गंगा प्रसाद

स्थिति : पूर्वी उत्तर प्रदेश में औषधीय प्रजातियों के स्तर के लिए साहित्य सर्वेक्षण किया गया और सामाजिक अध्ययन भी किए गए ताकि लोगों की सहभागिता के द्वारा इनके प्रोत्साहन, विक्रेयता और विकास के लिए क्रियाविधि विकसित करने हेतु भावी कार्यक्षेत्र का अध्ययन किया जा सके। जननद्रव्य संग्रहण के लिए 12 प्रजातियों यथा– एस्पेरेगस रेसीमोसस (सतावर), विन्का रोजीया (सदाबहार), टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया (गिलोय), क्लोरोफाइटम अरून्डिनेसीयम (सफेद मूली), बाकोपा मुनरी (ब्राह्मी), रावोल्फिया सर्पेन्टाइना (सर्पगंधा), बार्लेरिया प्रिओनाइट्स (काला बांस), प्लेन्टेगो ओवाटा (इसबगोल), प्लम्बेगो जीलेनिका (चित्रक), योस्कीमस नाइगर (अजवाइन), पाइपर लांगम (पिपली) और ओसिमम सैक्टम (तुलसी) की जांच की गई।

बाहर से सहायता–प्राप्त परियोजनाएं

परियोजना 1 : वन मूल यथा–जट्रोफा करकश, ऐजैडिरैक्टा इंडिका और पोंगेमिया पिन्नाटा के वृक्ष जनित तेल बीजों का अनुसंधान एवं विकास

प्रधान अन्वेषक–श्री वी.के. सिंह

स्थिति : इलाहाबाद में सरकारी भूमि पर वन मूल यथा– जट्रोफा करकश (25,000 पौधों), ऐजैडिरैक्टा इंडिका (10,000 पौधों) और पोंगेमिया पिन्नाटा (10,000 पौधों) के वृक्ष जनित तेल बीजों का आदर्श रोपण किया गया। प्रदर्शन भूखण्डों के रूप में रोपणों का पोषण किया जा रहा हैं। जट्रोफा रोपणों में, कुछ कवकी आक्रमण देखा गया, जिसने कुछ पौधों में मर्त्यता उत्पन्न की । पौधों को बचाने के लिए सुरक्षा उपाय किए गए हैं।

अनुसंधान उपलब्धियां

राज्य का नाम	2003–04 के दौरान पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2003–04 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2003–04 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
उत्तर प्रदेश	कोई नहीं	2	3

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालाएं / सेमिनार / संगोष्ठी / प्रदर्शनी

सहभागिता

1. श्री वी.के.सिंह ने भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में 17 और 18 जून, 2003 को "निर्धनता में कमी करने के लिए वन अनुसंधान विकास और प्रशिक्षण संस्थानों की परिवर्तनशील भूमिका" पर एशिया पेसिफिक क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
2. श्री वी.के. सिंह ने नोवोड बोर्ड, गुड़गांव में 11 और 12 नवम्बर, 2003 को जट्रोफा और करंज पर वृक्ष जनित तेल बीजों पर समूह बैठक में भाग लिया।
3. श्रीमती मुकुन्द दुबे और डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने बी.एच.यू. वाराणसी में 11 से 13 फरवरी, 2004 तक "भूमि, जल और वन का सतत् प्रबन्धं" पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

डॉ. पंत, संयुक्त सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने जनवरी, 2004 को केन्द्र का दौरा किया।